गलातियों के नाम पौलुस रसूल का ख़त

[illegible]

1 पौलूस रसूल इस ख़त का मुसन्निफ़ है, यह इब्तिदाई कलीसिया की एक ज़बान रखने वाली कलीसिया थी। पौलूस ने जुनूबी गलतिया की कलीसिया को तब लिखा जब उन्होंने उस के पहले मिश्नरी सफ़र में जो एशिया माइनर की तरफ़ तै की थी उस का साथ दिया था। गलतिया, रोम या कुरिन्थ की तरह एक शहर नहीं था बल्कि एक रोमी रियासत था जिस के कई एक शहर थे और कसीर ता'दाद में कलीसियाएं थीं। गलतिया के लोग जिन्हें पौलूस ने ख़त लिखे थे वह पौलूस ही के ज़रिए मसीह में आये थे।

[illegible]

तक़रीबन इस को 48 ईस्वी के बीच लिखी गई थी।

पौलूस ने ग़ालिबन गलतियों के नाम ख़त को अन्ताकिया से लिखा जबकि यह घरेलू बुनियाद पर था।

[illegible]

गलतियों के नाम का ख़त गलतिया की कलीसिया के अर्कान को लिखा गया था (गलतियों 1:1-2)।

[illegible]

इस ख़त को लिखने का मक़सूद था, यहूदियत बरतने वालों की झूटी इन्जील को ग़लत ठहराना, एक इन्जील जिसको पढ़ने के बाद यहूदी मसीहियों ने महसूस किया था कि नजात के लिए ख़तना कराना ज़रूरी है। और मक़्सद यह भी था कि गलतियों को उनके नजात की हकीक़त को याद दिलाना था। पौलूस ने अपनी रिसालत के इख़्तियार को क़ायम करने के ज़रिए साफ़ तौर से उन के हर सवाल का जवाब दिया जिस की बदौलत दलील पेश करते हुए उसने इन्जील की मनादी की थी। ईमान के वसीले से सिर्फ़

फ़ज़ल के ज़रिए लोग रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं। और यह सिर्फ़ ईमान के ज़रिए ही रूह की आज़ादी में उन्हें नई ज़िन्दगी जीने की ज़रूरत है।

[illegible]

मसीह में आज़ादी।

बैरूनी ख़ाका

1. तआरुफ़ — 1:1-10
2. इन्जील की तस्दीक़ व तौसीक़ — 1:11-2:21
3. ईमान के ज़रिए रास्तबाज़ ठहराया जाना — 3:1-4:31
4. ईमान की ज़िन्दगी को अमल में लाना और मसीह में आज़ादी — 5:1-6:18

[illegible]

1 पौलुस की तरफ़ से जो ना इंसान ों की जानिब से ना इंसान की वजह से, बल्कि ईसा 'मसीह और ख़ुदा बाप की वजह से जिसने उसको मुर्दों में से जिलाया, रसूल है;

2 और सब भाइयों की तरफ़ से जो मेरे साथ हैं, ग़लतिया सूबे की कलीसियाओं को ख़त:

3 ख़ुदा बाप और हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इतमिनान हासिल होता रहे।

4 उसी ने हमारे गुनाहों के लिए अपने आप को दे दिया; ताकि हमारे ख़ुदा और बाप की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हमें इस मौजूदा ख़राब जहान से ख़लासी बख़्शे।

5 उसकी बड़ाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे आमीन।

6 मैं ताअ'ज्जुब करता हूँ कि जिसने तुम्हें मसीह के फ़ज़ल से बुलाया, उससे तुम इस क़दर जल्द फिर कर किसी और तरह की ख़ुशख़बरी की तरफ़ माइल होने लगे,

7 मगर वो दूसरी नहीं; अलबत्ता कुछ ऐसे हैं जो तुम्हें उलझा देते और मसीह की ख़ुशख़बरी को बिगाड़ना चाहते हैं।

8 लेकिन हम या आसमान का कोई फ़रिश्ता भी उस ख़ुशख़बरी
के सिवा जो हमने तुम्हें सुनाई, कोई और ख़ुशख़बरी सुनाए तो
मला'उन हो।
9 जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ
कि उस ख़ुशख़बरी के सिवा जो तुम ने क़ुबूल की थी, अगर तुम्हें
और कोई ख़ुशख़बरी सुनाता है तो मला'उन हो।
10 अब मैं आदमियों को दोस्त बनाता हूँ या ख़ुदा को? क्या
आदमियों को ख़ुश करना चाहता हूँ? अगर अब तक आदिमयों
को ख़ुश करता रहता, तो मसीह का बन्दा ना होता।
11 ऐ भाइयों! मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि जो ख़ुशख़बरी मैं ने
सुनाई वो इंसान की नहीं।
12 क्यूँकि वो मुझे इंसान की तरफ़ से नहीं पहूँची, और न
मुझे सिखाई गई, बल्कि ख़ुदा' मसीह की तरफ़ से मुझे उसका
मुक़ाशिफ़ा हुआ।
13 चुनाँचे यहूदी तरीक़े में जो पहले मेरा चाल — चलन था,
तुम सुन चुके हो कि मैं ख़ुदा की कलीसिया को अज़ हद सताता
और तबाह करता था।
14 और मैं यहूदी तरीक़े में अपनी क़ौम के अक्सर हम उम्रों
से बढ़ता जाता था, और अपने बुज़ुर्गों की रिवायतों में निहायत
सरगर्म था।
15 लेकिन जिस ख़ुदा ने मेरी माँ के पेट ही से मख़्सूस कर लिया,
और अपने फ़ज़ल से बुला लिया, जब उसकी ये मर्ज़ी हुई
16 कि अपने बेटे को मुझ में ज़ाहिर करे ताकि मैं ग़ैर — क़ौमों
में उसकी ख़ुशख़बरी दूँ, तो न मैंने गोश्त और ख़ून से सलाह ली,
17 और न येरूशलेम में उनके पास गया जो मुझ से पहले रसूल
थे, बल्कि फ़ौरन अरब मुल्क को चला गया फिर वहाँ से दमिश्क़
शहर को वापस आया

18 फिर तीन बरस के बाद मै कैफ़ा से मुलाक़ात करने को गया
और पन्द्रह दिन तक उसके पास रहा।
19 मगर और रसूलों में से ख़ुदावन्द के भाई या'क़ूब के सिवा
किसी से न मिला।
20 जो बातें मैं तुम को लिखता हूँ, ख़ुदा को हाज़िर जान कर
कहता हूँ कि वो झूठी नहीं।
21 इसके बाद मैं सीरिया और किलकिया के इलाक़ों में आया;
22 और यहूदिया सूबा की कलीसियाएँ, जो मसीह में थीं मुझे
सूरत से न जानती थी,
23 मगर ये सुना करती थीं, जो हम को पहले सताता था, वो
अब उसी दीन की ख़ुशख़बरी देता है जिसे पहले तबाह करता था।
24 और वो मेरे ज़रिए ख़ुदा की बड़ाई करती थी।

2

[illegible]

1 आख़िर चौदह बरस के बाद मैं बरनबास के साथ फिर
येरूशलेम को गया और तितुस को भी साथ ले गया।
2 और मेरा जाना मुक़ाशिफ़ा के मुताबिक़ हुआ; और जिस
ख़ुशख़बरी की ग़ैर — क़ौमों में मनादी करता हूँ वो उन से बयान
की, मगर तन्हाई में उन्हीं के लोगों से जो कुछ समझे जाते थे,
कहीं ऐसा ना हो कि मेरी इस वक़्त की या अगली दौड़ धूप
बेफ़ाइदा जाए।
3 लेकिन तितुस भी जो मेरे साथ था और यूनानी है ख़तना करने
पर मजबूर न किया गया।
4 और ये उन झूठे भाइयों की वजह से हुआ जो छिप कर
दाख़िल हो गए थे, ताकि उस आज़ादी को जो तुम्हें मसीह ईसा में
हासिल है, जासूसों के तौर पर मालूम करके हमे ग़ुलामी में लाएँ।

5 उनके ताबे रहना हम ने पल भर के लिए भी मंज़ूर ना किया,
ताकि ख़ुशख़बरी की सच्चाई तुम में क़ाईम रहे।
6 और जो लोग कुछ समझे जाते थे, चाहे वो कैसे ही थे मुझे
इससे कुछ भी वास्ता नहीं; ख़ुदा किसी आदमी का तरफ़दार नहीं
उनसे जो कुछ समझे जाते थे मुझे कुछ हासिल ना हुआ।
7 लेकिन बर'अक्स इसके जब उन्होंने ये देखा कि जिस तरह
यहूदी मख़्तूनों को ख़ुशख़बरी देने का काम पतरस के सुपुर्द हुआ
8 क्यूँकि जिस ने मख़्तूनों की रिसालत के लिए पतरस में असर
पैदा किया, उसी ने ग़ैर — यहूदी न मख़्तून क़ौमों के लिए मुझ
में भी असर पैदा किया।
9 और जब उन्होंने उस तौफ़ीक़ को मा'लूम किया जो मुझे मिली
थी, तो या'क़ूब और कैफ़ा और याहुन ने जो कलीसिया के सुतून
समझे जाते थे, मुझे और बरनबास को दहना हाथ देकर शरीक
कर लिया, ताकि हम ग़ैर क़ौमों के पास जाएँ और वो मख़्तूनों के
पास;
10 और सिर्फ़ ये कहा कि ग़रीबों को याद रखना, मगर मैं ख़ुद
ही इसी काम की कोशिश में हूँ,
11 और जब कैफ़ा अंताकिया शहर में आया तो मैने रु — ब
— रु होकर उसकी मुख़ालिफ़त की, क्यूँकि वो मलामत के लायक़
था।
12 इस लिए कि या'क़ूब की तरफ़ से चन्द लोगों के आने से पहले
तो वो ग़ैर — क़ौम वालों के साथ खाया करता था, मगर जब वो
आ गए तो मख़्तूनों से डर कर बाज़ रहा और किनारा किया।
13 और बाक़ी यहूदी ईमानदारों ने भी उसके साथ होकर
रियाकारी की यहाँ तक कि बरनबास भी उसके साथ रियाकारी
में पड़ गया।
14 जब मैंने देखा कि वो ख़ुशख़बरी की सच्चाई के मुताबिक़
सीधी चाल नहीं चलते, तो मैने सब के सामने कैफ़ा से कहा, “जब
तू बावजूद यहूदी होने के ग़ैर क़ौमों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारता है

न कि यहूदियों की तरह तो ग़ैर क़ौमों को यहूदियों की तरह चलने
पर क्यूँ मजबूर करता है?”
15 जबकि हम पैदाइश से यहूदी हैं, और गुनहगार ग़ैर क़ौमों में
से नहीं।
16 तोभी ये जान कर कि आदमी शरी'अत के आमाल से नहीं
बल्कि सिर्फ़ ईसा मसीह पर ईमान लाने से रास्तबाज़ ठहरता
है ख़ुद भी मसीह ईसा पर ईमान लाने से रास्तबाज़ ठहरें न कि
शरी'अत के आमाल से क्यूँकि शरी'अत के अमाल से कोई भी
बशर रास्त बाज़ न ठहरेगा।
17 और हम जो मसीह में रास्तबाज़ ठहरना चाहते हैं, अगर
ख़ुद ही गुनाहगार निकलें तो क्या मसीह गुनाह का ज़रिया है?
हरगिज़ नहीं!
18 क्यूँकि जो कुछ मैंने शरी'अत को ढा दिया अगर उसे फिर
बनाऊँ, तो अपने आप को कुसुरवार ठहराता हूँ।
19 चुनाँचे मैं शरी'अत ही के वसीले से शरी'अत के ए'तिबार से
मारा गया, ताकि ख़ुदा के ए'तिबार से ज़िंदा हो जाऊँ।
20 मैं मसीह के साथ मसलूब हुआ हूँ; और अब मैं ज़िंदा न रहा
बल्कि मसीह मुझ में ज़िंदा है; और मैं जो अब जिस्म में ज़िन्दगी
गुज़ारता हूँ तो ख़ुदा के बेटे पर ईमान लाने से गुज़ारता हूँ, जिसने
मुझ से मुहब्बत रखी और अपने आप को मेरे लिए मौत के हवाले
कर दिया।
21 मैं ख़ुदा के फ़ज़ल को बेकार नहीं करता, क्यूँकि रास्तबाज़ी
अगर शरी'अत के वसीले से मिलती, तो मसीह का मरना बेकार
होता।

3

[illegible]

1 ऐ नादान ग़लतियो, किसने तुम पर जादू कर दिया? तुम्हारी
तो गोया आँखों के सामने ईसा मसीह सलीब पर दिखाया गया।

2 मैं तुम से सिर्फ़ ये गुज़ारिश करना चाहता हूँ: कि तुम
ने शरी'अत के आ'माल से पाक रूह को पाया या ईमान की
ख़ुशख़बरी के पैग़ाम से?
3 क्या तुम ऐसे नादान हो कि पाक रूह के तौर पर शुरू करके
अब जिस्म के तौर पर काम पूरा करना चाहते हो?
4 क्या तुमने इतनी तकलीफ़ें बे फ़ाइदा उठाईं? मगर शायद बे
फ़ाइदा नहीं।
5 पर जो तुम्हें पाक रूह बख़्शता और तुम में मोजिज़े ज़ाहिर
करता है, क्या वो शरी'अत के आ'माल से ऐसा करता है या ईमान
के ख़ुशख़बरी के पैग़ाम से?
6 चुनाँचे "अब्रहाम ख़ुदा पर ईमान लाया और ये उसके लिए
रास्तबाज़ी गिना गया।"
7 पस जान लो कि जो ईमानवाले हैं, वही अब्रहाम के फ़रज़न्द
हैं।
8 और किताब — ए — मुक़द्दस ने पहले से ये जान कर कि ख़ुदा
ग़ैर क़ौमों को ईमान से रास्तबाज़ ठहराएगा, पहले से ही अब्रहाम
को ये ख़ुशख़बरी सुना दी, "तेरे ज़रिए सब क़ौमें बर्क़त पाएँगी।"
9 इस पर जो ईमान वाले है, वो ईमानदार अब्रहाम के साथ
बर्क़त पाते है।
10 क्यूँकि जितने शरी'अत के आ'माल पर तकिया करते है, वो
सब ला'नत के मातहत हैं; चुनाँचे लिखा है, "जो कोई उन सब
बातों को जो किताब में से लिखी है; क़ाईम न रहे वो ला'नती
है।"
11 और ये बात साफ़ है कि शरी'अत के वसीले से कोई इंसान
ख़ुदा के नज़दीक रास्तबाज़ नहीं ठहरता, क्यूँकि कलाम में लिखा
है, रास्तबाज़ ईमान से जीता रहेगा।
12 और शरी'अत को ईमान से कुछ वास्ता नहीं, बल्कि लिखा
है, "जिसने इन पर 'अमल किया, वो इनकी वजह से जीता
रहेगा।"

13 मसीह जो हमारे लिए ला'नती बना, उसने हमे मोल लेकर
शरी'अत की ला'नत से छुड़ाया, क्यूँकि कलाम में लिखा है, "जो
कोई लकड़ी पर लटकाया गया वो ला'नती है।"
14 ताकि मसीह ईसा में अब्रहाम की बर्क़त ग़ैर क़ौमों तक भी
पहूँचे, और हम ईमान के वसीले से उस रूह को हासिल करें जिसका
वा'दा हुआ है।

15 ऐ भाइयों! मैं इंसान ियत के तौर पर कहता हूँ कि अगर
आदमी ही का 'अहद हो, जब उसकी तस्दीक़ हो गई हो तो कोई
उसको बातिल नहीं करता और ना उस पर कुछ बढ़ाता है।
16 पस अब्रहाम और उसकी नस्ल से वा'दे किए गए। वो ये
नहीं कहता, नस्लों से, जैसा बहुतों के वास्ते कहा जाता है: बल्कि
जैसा एक के वास्ते, तेरी नस्ल को और वो मसीह है।

17 मेरा ये मतलब है: जिस 'अहद की ख़ुदा ने पहले से तस्दीक़
की थी, उसको शरी'अत चार सौ तीस बरस के बाद आकर बातिल
नहीं कर सकती कि वो वा'दा लअहासिल हो।
18 क्यूँकि अगर मीरास शरी'अत की वजह से मिली है तो वा'दे
की वजह से ना हुई, मगर अब्रहाम को ख़ुदा ने वा'दे ही की राह
से बख़्शी।

19 पस शरी'अत क्या रही? वो नाफ़रमानी की वजह से बाद में
दी गई कि उस नस्ल के आने तक रहे, जिससे वा'दा किया गया
था; और वो फ़रिश्तों के वसीले से एक दरमियानी की मा'रिफ़त
मुक़र्रर की गई।
20 अब दर्मियानी एक का नहीं होता, मगर ख़ुदा एक ही है।

21 पस क्या शरी'अत ख़ुदा के वा'दों के ख़िलाफ़ है? हरगिज़
नहीं! क्यूँकि अगर कोई एसी शरी'अत दी जाती जो ज़िन्दगी
बख़्श सकती तो, अलबत्ता रास्तबाज़ी शरी'अत की वजह से
होती।

22 मगर किताब — ए — मुक़द्दस ने सबको गुनाह के मातहत
कर दिया, ताकि वो वा'दा जो ईसा मसीह पर ईमान लाने पर
मौक़ूफ़ है, ईमानदारों के हक़ में पूरा किया जाए।
23 ईमान के आने से पहले शरी'अत की मातहती में हमारी
निगहबानी होती थी, और उस ईमान के आने तक जो ज़ाहिर
होनेवाला था, हम उसी के पाबन्द रहे।
24 पस शरी'अत मसीह तक पहूँचाने को हमारा उस्ताद बनी,
ताकि हम ईमान की वजह से रास्तबाज़ ठहरें।
25 मगर जब ईमान आ चुका, तो हम उस्ताद के मातहत ना
रहे।
26 क्यूँकि तुम उस ईमान के वसीले से जो मसीह ईसा में है,
ख़ुदा के फ़र्ज़न्द हो।
27 और तुम सब, जितनों ने मसीह मैं शामिल होने का
बपतिस्मा लिया मसीह को पहन लिया
28 न कोई यहूदी रहा, न कोई यूनानी, न कोई ग़ुलाम, ना
आज़ाद, न कोई मर्द, न औरत, क्यूँकि तुम सब मसीह 'ईसा में
एक ही हो।
29 और अगर तुम मसीह के हो तो अब्रहाम की नस्ल और वा'दे
के मुताबिक़ वारिस हो।

4

1 और मैं ये कहता हूँ कि वारिस जब तक बच्चा है, अगरचे वो
सब का मालिक है, उसमें और ग़ुलाम में कुछ फ़र्क़ नहीं।
2 बल्कि जो मि'आद बाप ने मुक़र्रर की उस वक़्त तक सरपरस्तों
और मुख़्तारों के इख़्तियार में रहता है।
3 इसी तरह हम भी जब बच्चे थे, तो दुनियावी इब्तिदाई बातों
के पाबन्द होकर ग़ुलामी की हालत में रहे।
4 लेकिन जब वक़्त पूरा हो गया, तो ख़ुदा ने अपने बेटे को भेजा
जो 'औरत से पैदा हुआ और शरी'अत के मातहत पैदा हुआ,

5 ताकि शरी'अत के मातहतों को मोल लेकर छुड़ा ले और हम
को लेपालक होने का दर्जा मिले।
6 और चूँकि तुम बेटे हो, इसलिए ख़ुदा ने अपने बेटे का रूह
हमारे दिलों में भेजा जो 'अब्बा 'या'नी ऐ बाप, कह कर पुकारता
है।
7 पस अब तू ग़ुलाम नहीं बल्कि बेटा है, और जब बेटा हुआ तो
ख़ुदा के वसीले से वारिस भी हुआ।

[illegible]

8 लेकिन उस वक़्त ख़ुदा से नवाक़िफ़ होकर तुम उन मा'बूदों
की ग़ुलामी में थे जो अपनी ज़ात से ख़ुदा नहीं,
9 मगर अब जो तुम ने ख़ुदा को पहचाना, बल्कि ख़ुदा ने तुम
को पहचाना, तो उन कमज़ोर और निकम्मी शुरुआती बातों की
तरफ़ किस तरह फिर रुजू' होते हो, जिनकी दुबारा ग़ुलामी करना
चाहते हो?
10 तुम दिनों और महीनों और मुक़र्रर वक़्तों और बरसों को
मानते हो।
11 मुझे तुम्हारे बारे में डर लगता है, कहीं ऐसा न हो कि जो
मेहनत मैंने तुम पर की है बेकार न हो जाए
12 ऐ भाइयों! मैं तुमसे गुज़ारिश करता हूँ कि मेरी तरह हो
जाओ, क्यूँकि मैं भी तुम्हारी तरह हूँ; तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा
नहीं।
13 बल्कि तुम जानते हो कि मैंने पहली बार 'जिस्म की कमज़ोरी
की वजह से तुम को ख़ुशख़बरी सुनाई थी।
14 और तुम ने मेरी उस जिस्मानी हालत को, जो तुम्हारी
आज़माईश का ज़रिया थी, ना हक़ीर जाना, न उससे नफ़रत की;
और ख़ुदा के फ़रिश्ते बल्कि मसीह ईसा की तरह मुझे मान लिया।
15 पस तुम्हारा वो ख़ुशी मनाना कहाँ गया? मैं तुम्हारा गवाह
हूँ कि हो सकता तो तुम अपनी आँखें भी निकाल कर मुझे दे देते।

16 तो क्या तुम से सच बोलने की वजह से मैं तुम्हारा दुश्मन
बन गया?
17 वो तुम्हें दोस्त बनाने की कोशिश तो करते हैं, मगर नेक
नियत से नहीं; बल्कि वो तुम्हें अलग करना चाहते हैं, ताकि तुम
उन्हीं को दोस्त बनाने की कोशिश करो।
18 लेकिन ये अच्छी बात है कि नेक अम्र में दोस्त बनाने की हर
वक़्त कोशिश की जाए, न सिर्फ़ जब मैं तुम्हारे पास मोजूद हूँ।

19 ऐ मेरे बच्चों, तुम्हारी तरफ़ से मुझे फिर बच्चा जनने के से
दर्द लगे हैं, जब तक कि मसीह तुम में सूरत न पकड़ ले।
20 जी चाहता है कि अब तुम्हारे पास मौजूद होकर और तरह
से बोलूँ क्यूँकि मुझे तुम्हारी तरफ़ से शुबह है।

21 मुझ से कहो तो, तुम जो शरी'अत के मातहत होना चाहते
हो, क्या शरी'अत की बात को नहीं सुनते
22 ये कलाम में लिखा है कि अब्रहाम के दो बेटे थे; एक लौंडी
से और एक आज़ाद से।
23 मगर लौंडी का जिस्मानी तौर पर, और आज़ाद का बेटा
वा'दे के वजह से पैदा हुआ।

24 इन बातों में मिसाल पाई जाती है: इसलिए ये 'औरतें गोया
दो; अहद हैं। एक कोह-ए-सीना पर का जिस से ग़ुलाम ही पैदा
होते हैं, वो हाजरा है।
25 और हाजरा 'अरब का कोह-ए-सीना है, और मौजूदा
येरूशलेम उसका जवाब है, क्यूँकि वो अपने लड़कों समेत ग़ुलामी
में है।

26 मगर 'आलम — ए — बाला का येरूशलेम आज़ाद है, और
वही हमारी माँ है।
27 क्यूँकि लिखा है,

"कि ऐ बाँझ, जिसके औलाद नहीं होती ख़ुशी मनह,

तू जो दर्द — ए — ज़िह से नावाक़िफ़ है, आवाज़ ऊँची करके
चिल्ला;
क्यूँकि बेकस छोड़ी हुई की औलाद है शौहर वाली की औलाद से
ज़्यादा होगी।
28 पस ऐ भाइयों! हम इज़्हाक़ की तरह वा'दे के फ़र्ज़न्द हैं।
29 और जैसे उस वक़्त जिस्मानी पैदाइश वाला रूहानी पैदाइश
वाले को सताता था, वैसे ही अब भी होता है।
30 मगर किताब — ए — मुक़द्दस क्या कहती है? ये कि "लौंडी
और उसके बेटे को निकाल दे, क्यूँकि लौंडी का बेटा आज़ाद के
साथ हरगिज़ वारिस न होगा।"
31 पस ऐ भाइयों! हम लौंडी के फ़र्ज़न्द नहीं, बल्कि आज़ाद के
हैं।

5

[illegible]

1 मसीह ने हमे आज़ाद रहने के लिए आज़ाद किया है; पस
क़ाईम रहो, और दोबारा ग़ुलामी के जुवे में न जुतो।
2 सुनो, मैं पौलुस तुमसे कहता हूँ कि अगर तुम ख़तना
कराओगे तो मसीह से तुम को कुछ फ़ाइदा न होगा।
3 बल्कि मैं हर एक ख़तना करने वाले आदमी पर फिर गवाही
देता हूँ, कि उसे तमाम शरी'अत पर' अमल करना फ़र्ज़ है।
4 तुम जो शरी'अत के वसीले से रास्तबाज़ ठहरना चाहते हो,
मसीह से अलग हो गए और फ़ज़ल से महरूम।
5 क्यूँकि हम पाक रूह के ज़रिए, ईमान से रास्तबाज़ी की
उम्मीद बर आने के मुन्तज़िर हैं।
6 और मसीह ईसा में न तो ख़तना कुछ काम का है न नामख़्तूनी
मगर ईमान जो मुहब्बत की राह से असर करता है।

7 तुम तो अच्छी तरह दौड़ रहे थे किसने तुम्हें हक़ के मानने से
रोक दिया।
8 ये तरग़ीब ख़ुदा जिसने तुम्हें बुलाया उस की तरफ़ से नहीं है।
9 थोड़ा सा ख़मीर सारे गूँधे हुए आटे को ख़मीर कर देता है।
10 मुझे ख़ुदावन्द में तुम पर ये भरोसा है कि तुम और तरह का
ख़याल न करोगे; लेकिन जो तुम्हें उलझा देता है, वो चाहे कोई
हो सज़ा पाएगा।
11 और ऐ भाइयों! अगर मैं अब तक ख़तना का एलान करता
हूँ, तो अब तक सताया क्यूँ जाता हूँ? इस सूरत में तो सलीब की
ठोकर तो जाती रही।
12 क़ाश कि तुम्हें बेक़रार करने वाले अपना तअ'ल्लुक़ तोड़
लेते।
13 ऐ भाइयों! तुम आज़ादी के लिए बुलाए तो गए हो, मगर
ऐसा न हो कि ये आज़ादी जिस्मानी बातों का मौक़ा, बने; बल्कि
मुहब्बत की राह पर एक दूसरे की ख़िदमत करो।
14 क्यूँकि पूरी शरी'अत पर एक ही बात से 'अमल हो जाता है,
या; नी इससे कि "तू अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।"
15 लेकिन अगर तुम एक दूसरे को फाड़ खाते हो, तो ख़बरदार
रहना कि एक दूसरे को ख़त्म न कर दो।
16 मगर मैं तुम से ये कहता हूँ, रूह के मुताबिक़ चलो तो जिस्म
की ख़्वाहिश को हरगिज़ पूरा न करोगे।
17 क्यूँकि जिस्म रूह के ख़िलाफ़ ख़्वाहिश करता है और रूह
जिस्म के ख़िलाफ़ है, और ये एक दूसरे के मुख़ालिफ़ हैं, ताकि जो
तुम चाहो वो न करो।
18 और अगर तुम पाक रूह की हिदायत से चलते हो, तो
शरी'अत के मातहत नहीं रहे।
19 अब जिस्म के काम तो ज़ाहिर हैं, या'नी कि हरामकारी,
नापाकी, शहवत परस्ती,

20 बुत परसती, जादूगरी, अदावतें, झगड़ा, हसद, ग़ुस्सा,
तफ़्रक़े, जुदाइयाँ, बिद'अतें,
21 अदावत, नशाबाज़ी, नाच रंग और इनकी तरह, इनके ज़रिए
तुम्हें पहले से कहे देता हूँ जिसको पहले बता चुका हूँ कि ऐसे काम
करने वाले ख़ुदा की बादशाही के वारिस न होंगे।
22 मगर पाक रूह का फल मुहब्बत, ख़ुशी, इत्मीनान, सब्र,
मेहरबानी, नेकी, ईमानदारी
23 हलीम, परहेज़गारी है; ऐसे कामों की कोई शरी; अत
मुख़ालिफ़ नहीं।
24 और जो मसीह ईसा के हैं उन्होंने जिस्म को उसकी रगबतों
और ख़्वाहिशों समेत सलीब पर खींच दिया है।
25 अगर हम पाक रूह की वजह से ज़िंदा हैं, तो रूह के मुवाफ़िक़
चलना भी चाहिए।
26 हम बेजा फ़ख़्र करके न एक दूसरे को चिढ़ाएँ, न एक दूसरे से
जलें।

6

[illegible]

1 ऐ भाइयों! अगर कोई आदमी किसी क़ुसूर में पकड़ा भी जाए
तो तुम जो रूहानी हो, उसको नर्म मिज़ाजी से बहाल करो, और
अपना भी ख्याल रख कहीं तू भी आज़माइश में न पड़ जाए।
2 तुम एक दूसरे का बोझ उठाओ, और यूँ मसीह की शरी' अत
को पूरा करो।
3 क्यूँकि अगर कोई शख़्स अपने आप को कुछ समझे और कुछ
भी न हो, तो अपने आप को धोखा देता है।
4 पस हर शख़्स अपने ही काम को आज़माले, इस सूरत में उसे
अपने ही बारे में फ़ख़्र करने का मौक़ा'होगा न कि दूसरे के बारे में।
5 क्यूँकि हर शख़्स अपना ही बोझ उठाएगा।

6 कलाम की ता'लीम पानेवाला, ता'लीम देनेवाले को सब
अच्छी चीज़ों में शरीक करे।
7 धोखा न खाओ; ख़ुदा ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्यूँकि
आदमी जो कुछ बोता है वही काटेगा।
8 जो कोई अपने जिस्म के लिए बोता है, वो जिस्म से हलाकत
की फ़स्ल काटेगा; और जो रूह के लिए बोता है, वो पाक रूह से
हमेशा की ज़िन्दगी की फ़सल काटेगा।
9 हम नेक काम करने में हिम्मत न हारें, क्यूँकि अगर बेदिल न
होंगे तो 'सही वक़्त पर काटेंगे।
10 पस जहाँ तक मौक़ा मिले सबके साथ नेकी करें ख़ासकर
अहले ईमान के साथ।
11 देखो, मैंने कैसे बड़े बड़े हरफों में तुम को अपने हाथ से लिखा
है।
12 जितने लोग जिस्मानी ज़ाहिर होना चाहते हैं वो तुम्हें
ख़तना कराने पर मजबूर करते हैं, सिर्फ़ इसलिए कि मसीह की
सलीब के वजह से सताए न जाँए।
13 क्यूँकि ख़तना कराने वाले ख़ुद भी शरी'अत पर अमल नहीं
करते, मगर तुम्हारा ख़तना इस लिए कराना चाहते हैं, कि तुम्हारी
जिस्मानी हालत पर फ़ख़्र करें।
14 लेकिन ख़ुदा न करे कि मैं किसी चीज़ पर फ़ख़्र, करूँ सिवा
अपने ख़ुदावन्द मसीह ईसा की सलीब के, जिससे दुनिया मेरे
ए'तिबार से।
15 क्यूँकि न ख़तना कुछ चीज़ है न नामख़्तूनी, बल्कि नए सिरे
से मख़लूक़ होना।
16 और जितने इस क़ईदे पर चलें उन्हें, और ख़ुदा के इस्राईल
को इत्मीनान और रहम हासिल होता रहे।
17 आगे को कोई मुझे तकलीफ़ न दे, क्यूँकि मैं अपने जिस्म पर
मसीह के दाग़ लिए फिरता हूँ।

18 ऐ भाइयों! हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल तुम्हारे
साथ रहे। अमीन

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc